Modern Hindi Khandakavyas
(1900 - 1970)
A CRITICAL STUDY

Thesis submitted to

THE UNIVERSITY OF COCHIN

for the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

by

S. THANKAMONI AMMA, M.A.

Under the Supervision

of

DR. N. RAMAN NAIR

M.A. (Hindi, [illegible]) Ph.D.

DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF COCHIN
COCHIN-22.

DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF COCHIN
COCHIN-22
KERALA
1977

आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य

[सन् १९०० से १९७० ई० तक]

एक आलोचनात्मक अध्ययन

[कोचिन विश्वविद्यालय की पी-एच. डी.
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध]

प्रस्तुतकर्त्री :—

एस० तंकमणि अम्मा

निर्देशक :—

डॉ० एन. रामन नायर एम. ए.

(हिन्दी, अंग्रेज़ी, मलयालम) पी-एच. डी.

रीडर हिन्दी विभाग

कोचिन विश्वविद्यालय

केरल ।

हिन्दी–विभाग

कोचिन विश्वविद्यालय

कोचिन-२२

केरल ।

१९७५

ACKNOWLEDGEMENT

The work was carried out in the Hindi Department, University of Cochin, Cochin-22, during the tenure of Scholarship awarded to me by the University of Cochin. I sincerely express my gratitude to the University of Cochin for this kind of help and encouragement.

18.10.75

(S. Thankamoni Amma)

CERTIFICATE

This is to certify that this thesis is a bonafide record of work carried out by Smy. S. Thankamoni Amma, under my supervision for Ph.D., and no part of this has hitherto been submitted for a degree in any University.

Department of Hindi,
University of Cochin,
COCHIN-22

Dr. N. Raman Nair
M.A. (Hindi, English & Malayalam)
Ph.D.
Supervising Teacher

भूमिका

संस्कृत के आचार्यों तथा हिन्दी के विद्वानों द्वारा एक प्रकार से उपेक्षित एक काव्यरूप रहा है खण्डकाव्य। 'उपेक्षा' शब्द का प्रयोग मैंने एक विशेष अर्थ में ही किया है। इससे यह मतलब नहीं कि संस्कृत एवं हिन्दी के काव्यशास्त्रियों ने इस काव्यरूप की नितांत उपेक्षा की है, अर्थात् उसकी चर्चा ही नहीं की। तात्पर्य केवल इतना है कि काव्य के इतर रूपों की जितनी प्रमुखता के साथ विवेचना हुई है, खण्डकाव्य की उतनी नहीं हुई। यही उपेक्षा खण्डकाव्य साहित्य एवं उसके काव्यरूप-विषयक शोधकार्य की भी हुई है। हिन्दी के खण्डकाव्यों पर विभिन्न विश्वविद्यालयों की ओर से शोधकार्य तो खूब हो रहा है, किन्तु प्रकाशित होकर निकला है केवल एक ही ग्रंथ जिसका नाम है "हिन्दी के मध्यकालीन खण्डकाव्य"।[१] जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि इसका सम्बन्ध हिन्दी के मध्यकाल में विरचित खण्डकाव्यों से है। आदिकाल में खण्डकाव्य अधिक विरचित नहीं हुए, मध्यकाल में रामभक्ति एवं कृष्णभक्ति सम्बन्धी अनेकों खण्डकाव्य लिखे गये। रीतिकाल में खण्डकाव्य की रचना बहुत कम हुई। आधुनिक काल में अन्यान्य काव्यरूपों की भाँति खण्डकाव्य रूप का भी सर्वांगीण विकास हुआ। खण्डकाव्यों के अभूतपूर्व विकास का यह युग सचमुच हिन्दी खण्डकाव्य परम्परा का सुवर्ण-युग है। आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्यों की विशेष महत्ता का एक कारण यह भी है कि आधुनिक काल के पूर्व तक अवधी, ब्रजभाषा जैसी हिन्दी की अन्यान्य बोलियों में ही खण्डकाव्य प्रणीत हुए। खड़ी बोली हिन्दी में खण्डकाव्य की रचना तो आधुनिक काल में ही हुई है तथा उन आधुनिक खण्डकाव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन ही इस शोधग्रंथ का विषय है।

खण्डकाव्य जैसे विषय पर शोध करने वाली अहिन्दी भाषी को आवश्यक सामग्री के अभाव के कारण कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा अवश्य ही

१- डा० सियाराम तिवारी.

कुछ कुछ परिमितियाँ रहती हैं। इन परिमितियों से दम घुटकर दिल्ली विश्वविद्यालय के ग्रंथालय का भी उपयोग कर डाला गया तथा अध्ययन के अधूरेपन को दूर करने का सरसक प्रयत्न किया गया है। 'आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्य' विषयक कोई भी प्रकाशित शोध प्रबन्ध उपलब्ध नहीं हो रहा है, तब तो इस विषय की अपनी महत्ता है तथा मौलिकता भी। विषय की महत्ता एवं मौलिकता के अनुरूप उसे ढालने का प्रयत्न शुरू हुआ तो खण्डकाव्य रूप सम्बन्धी भिन्न-भिन्न धारणाएं सामने आयीं। स्पष्ट महसूस हुआ कि संस्कृत के पुराने आचार्यों से लेकर हिन्दी के आधुनिक विद्वानों तक ने इसके रूप को पूर्णतः स्पष्ट करने का कष्ट नहीं उठाया है। संस्कृत के कतिपय आचार्यों ने सूत्ररूप में इसकी कुछ परिभाषाएं दे दीं तथा हिन्दी के आचार्य मात्र उनके व्याख्याता हुए। खण्डकाव्य के स्वरूप सम्बन्धी किसी निश्चित विधि के अभाव में विषय प्रवेश के पहले खण्डकाव्य के स्वरूप-निर्धारण की आवश्यकता का अनुभव हुआ।

मैंने संस्कृत तथा हिन्दी के उन समस्त ग्रंथों का लाभ उठाया है जिनमें खण्डकाव्य की चर्चा हुई है। खण्डकाव्य शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग करने वाले आचार्य विश्वनाथ हुए तथा उनके भी पूर्व ऐसे एक लघुकाव्य रूप की परिकल्पना करने वाले दण्डी, रुद्रट जैसे आचार्य भी हुए हैं। खण्डकाव्य जैसे रूप की खोज मैंने पाश्चात्य काव्यशास्त्र में भी की है तथा खण्डकाव्य के कुछ समरूप वहाँ प्राप्त भी हुए हैं।

डा० शकुन्तला दुबे ने अपने शोधग्रंथ 'काव्य रूपों के मूलस्रोत और उनका विकास' के पंचम एवं षष्ठ अध्यायों में, डा० निर्मला जैन ने 'आधुनिक हिन्दी काव्य में रूपविधान' में तथा डा० गोपालदत्त सारस्वत ने 'आधुनिक हिन्दी काव्य में परम्परा तथा प्रयोग' में संक्षेप में अन्यान्य काव्यरूपों के साथ खण्डकाव्यों के स्वरूप निर्धारण का प्रयास किया है। तीनों के ही अध्ययन का क्षेत्र हिन्दी के समस्त काव्यरूप रहे, अपने विस्तृत-विषय-परिधि के बीच खण्डकाव्य के विस्तृत विश्लेषण का अवसर रहा ही नहीं। 'हिन्दी के मध्यकालीन खण्डकाव्य' नामक शोधग्रंथ में भी डा० शिवाराम तिवारी ने खण्डकाव्य के स्वरूप का विवेचन किया है, साथ ही साथ हिन्दी के मध्यकालमें विरचित खण्डकाव्यों

का प्रौतानुसंधान तथा मूल्यांकन का कार्य भी आपने किया है । रही आधुनिक खण्ड-काव्यों की बात । डा० कनवारीलाल शर्मा ने अपने शोध ग्रंथ 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी प्रबन्ध काव्य' में स्वातंत्र्योत्तर काल में प्रणीत खण्डकाव्यों की भी चर्चा की है । प्रस्तुत शोधप्रबन्ध का भी सम्बन्ध केवल स्वातंत्र्योत्तर खण्डकाव्यों से रहा है । आधुनिक काल में विनिर्मित समस्त खण्डकाव्यों के अध्ययन की बात अभी शेष रही । आधुनिक काल में विरचित उपलब्ध संपूर्ण खण्डकाव्यों का अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयत्न ही प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में हुआ है ।

लक्ष्यग्रंथों के आधार पर ही लक्षण निरूपित होते हैं । साहित्यिक प्रगति एवं क्रांति के अनुसार लक्ष्यग्रंथों में परिवर्तन होता रहता है तथा तदनुकूल उनके लक्षणों में भी यत्किंचित परिवर्तन का होना स्वाभाविक है । किन्तु निश्चित रूप से उनका मूल लक्षण समस्त काव्यरूपों में सुरक्षित रहता है । उन्हीं मूल लक्षणों के आधार पर काव्यविशेष का चयन हो सकता है । आधुनिक काल के सन् १९०० ई० से लेकर १९७० तक के मुख्यतया १०९ खण्डकाव्य उपलब्ध हुए । इन्हीं ग्रंथों के आधार पर इस शोध प्रबन्ध का संगठन हुआ है । इसमें आधुनिक हिन्दी के खण्डकाव्यों का सर्वांगपूर्ण विश्लेषण हुआ है तथा उनका मूल्यांकन भी ।

सात अध्यायों में प्रस्तुत शोधप्रबन्ध विभक्त है । प्रथम अध्याय में अन्यान्य काव्यरूपों के बीच खण्डकाव्य का स्थान एवं उसका स्वरूप निर्धारित हुआ है । भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्रियों की प्रस्तुत काव्यरूप विषयक मान्यताओं पर भी प्रकाश डाला गया है । अन्य समान काव्यरूपों से खण्डकाव्य की तुलना तथा पाश्चात्य काव्य-शास्त्र में निरूपित इसके स्वरूपों की खोज का प्रयत्न भी इसमें हुआ है । खण्डकाव्य का स्वरूप एवं लक्षण निर्धारण तथा वर्गीकरण भी इस अध्याय का विषय बना है ।

द्वितीय अध्याय में उस साहित्यिक वातावरण का परिचिंतन हुआ है जिसके बीच आधुनिक खण्डकाव्यों का उदय एवं उत्कर्ष हुआ है । इस प्रसंग में आधुनिक कालीन भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों

पर प्रकाश डालते हुए आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा के उद्भव एवं विकास का दिग्दर्शन किया गया है ।

तृतीय अध्याय पर्याप्त विस्तृत है । मुख्यत: इसमें हिन्दी के आधुनिक खण्ड-काव्यों का कालक्रमानुसार[१] अध्ययन प्रस्तुत हुआ है । तीन भागों में यह कार्य संपन्न हुआ है (क) छायावादपूर्व युग के खण्डकाव्य (ख) छायावादी युग के खण्डकाव्य तथा (ग) छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्य । इस अध्याय के प्रारंभ में आधुनिक काल से पूर्व की खण्डकाव्य-धारा पर भी एक विहंगावलोकन हुआ है । प्रत्येक युग की प्रमुख काव्यप्रवृत्तियों एवं काव्यगत विशेषताओं पर भी यथास्थान विचार किया गया है ।

चतुर्थ एवं पंचम अध्याय आधुनिक हिन्दी खण्डकाव्यों की सम्यक् आलोचना को लेकर चलते हैं । चतुर्थ अध्याय में खण्डकाव्यों के अन्तरंग कथावस्तु, पात्र एवं चरित्रचित्रण रस संयोजन आदि बातों की विशद परिचर्चा हुई है ।

पंचम अध्याय में खण्डकाव्यों के बहिरंग तत्वों का अध्ययन हुआ है । इसके अन्तर्गत अलंकार, छन्द, भाषाशैली आदि की विशेष चर्चा की गयी है । साथ ही साथ मंगलाचरण, सर्गविधान, नामकरण जैसे काव्यशिल्प सम्बन्धी तत्वों पर भी विचारविमर्श किया गया है ।

षष्ठ अध्याय में आधुनिक खण्डकाव्यधारा का भिन्न-भिन्न आधारों पर वर्गीकरण हुआ है । कालक्रमानुसार वर्गीकरण के अतिरिक्त काव्यवस्तु, सर्ग, रस, छन्द वर्णनशैली आदि आधारों पर भी खण्डकाव्यों के वर्गीकरण का प्रयास इसमें किया गया है ।

सप्तम अध्याय में आधुनिक हिन्दी साहित्य में खण्डकाव्य का स्थान निर्धारित हुआ है, उसके उदय एवं उत्कर्ष का चित्र खींचते हुए उसके सुवर्णकाल की चर्चा हुई है तथा

१- प्रकाशन तिथि के अनुसार,

खण्डकाव्य विषयक अबतकी उपलब्धियों का मूल्यांकन करते हुए आधुनिक खण्डकाव्य-क्षेत्र में हुई प्रगति का चित्रण तथा मूल्यांकन भी हुआ है।

हर एक अध्याय के अन्त में अपना निष्कर्ष देकर शोध प्रबन्ध को अधिक स्पष्ट, सुसंगठित एवं मौलिक बनाने का प्रयत्न भी किया गया है। कई नयी सामग्री को प्रस्तुत करने तथा प्राप्त वस्तुओं तथा तथ्यों को नये रूप से निरूपित करने का मैंने यथाशक्ति प्रयत्न किया है। फिर भी यदि कुछ परिमिति रह गयी हों तो क्षंतव्य है।

हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति बचपन से ही मेरा जो अतीव आकर्षण रहा, उसी से प्रेरित होकर मलयालम भाषा-भाषी होते हुए भी मैंने हिन्दी मुख्य विषय के रूपमें चुन ली। केरलविश्वविद्यालय की बी० ए० (सन् १९६९) तथा एम० ए० (सन् १९७१) दोनों परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी में सर्वप्रथम उत्तीर्ण हुई तो, हिन्दी के प्रति मेरी ममता और भी बढ़ गयी। हिन्दी काव्यों के प्रति मेरी सुदृढ़ अभिरुचि देखकर मेरे संपूज्य गुरुवर एवं वाणी के वरदपुत्र व उपासक डा० राममनोहर जी ने मुझे हिन्दी खण्डकाव्यों पर शोधकार्य करने का आदेश दिया। तदनुसार उन्हीं के निर्देशन में सन् १९७१ ई० से कोचिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में हिन्दी खण्डकाव्यों पर मैंने शोध कार्य शुरू किया। आवश्यक सामग्री के अभाव में बराबर कठिनाइयाँ सामने आयीं, पर डाक्टर साहब सदैव प्रेरणा देते रहे। उन्हीं की प्रेरणा का परिणाम है मेरा यह शोधप्रबन्ध। आप मुझे प्रौढ़ परामर्शों एवं सुझावों से निरन्तर सचेत करते रहे, यदि उनकी सतत प्रेरणा न होती तो मेरा शोधकार्य अधूरा ही रहता। उनके प्रति मेरा हृदय आदर एवं कृतज्ञता से भरा हुआ है।

बचपन से ही हिन्दी के प्रति मेरे मन में प्रेम पैदा करने वाले हिन्दी के अनन्य सेवक मेरे पूज्य पिताजी प्रो० आर० जनार्दनन पिल्लै जी रहे, जिनके आशीर्वादों के आलोक में यह कार्य संपन्न हुआ है। कोचिन विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष डा० एम० ई० विश्वनाथय्यर के वात्सल्यपूर्ण उपदेशों से मुझे असीम लाभ हुआ है। आपको

भी मेरी कृतज्ञता की अंजलि अर्पित है । मेरे शुभेच्छु सभी थंग गुरुजनों तथा बन्धुओं के प्रति भी मैं आभारी हूँ । शोधकार्य में आवश्यक सहायता देने वाले डा० दीपचन्द तथा दिल्ली में आवास की सुविधा दिलाने वाले श्री कमलरंजन, अशोक सेठ, शरत जैन, थेलमस्क वास्कुटट (थाइलैण्ड) जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय के शुभाकांक्षों को भी मेरा हार्दिक धन्यवाद है ।

- एम० लोकमणि शम्मा

विषयानुक्रमणिका

प्रथम अध्याय : (पृष्ठ १ से ३८ तक)

खण्डकाव्य : स्वरूप एवं वर्गीकरण

स्वरूप (क) संस्कृत काव्यशास्त्र के अनुसार -- काव्य का वर्गीकरण, खण्डकाव्य का स्थान -- परिभाषा तथा लक्षण । (ख) हिन्दी काव्यशास्त्र के अनुसार खण्डकाव्य सम्बन्धी मान्यतायें, परिभाषा तथा लक्षण । (ग) पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अनुसार -- काव्य विभाजन -- खण्डकाव्य के समरूप ।

खण्डकाव्य एवं कतिपय अन्य समान काव्यरूप -- (१) खण्डकाव्य एवं महाकाव्य (२) खण्डकाव्य एवं एकार्थ काव्य (३) खण्डकाव्य एवं कथाकाव्य (४) खण्डकाव्य एवं गद्यरूप (कहानी एवं एकांकी) (५) खण्डकाव्य एवं मिश्रकाव्य (६) खण्डकाव्य एवं आख्यानक कविता (७) खण्डकाव्य एवं गीतिकाव्य ।

खण्डकाव्य के लक्षण -- वर्गीकरण -- खण्डकाव्य परम्परा का वर्गीकरण -- कालविभाजन -- कालविभाजन की सार्थकता -- निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय : (पृष्ठ ३९ से ९० तक)

साहित्यिक वातावरण एवं आधुनिक खण्डकाव्य

आधुनिक काल -- वातावरण -- नवचेतना का युग -- अंग्रेजों का आगमन -- अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार -- राजनीतिक स्थिति -- स्वातंत्र्यपूर्व काल -- स्वातंत्र्योत्तर काल । सांस्कृतिक स्थिति -- विभिन्न सांस्कृतिक आंदोलन -- ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, प्रार्थना-समाज, रामकृष्ण मिशन थियोसफिकल सोसाइटी -- इनका प्रभाव । धार्मिक स्थिति -- धार्मिक चेतना -- विभिन्न संस्थाओं का योगदान -- स्वतंत्र भारत में धार्मिक स्थिति । सामाजिक स्थिति -- अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव, समाज का उद्धार स्त्री-शिक्षा, बहुतोद्धार, नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रभाव । साहित्यिक स्थिति -- अंग्रेजी प्रभाव,

मुद्रण कला का विकास -- हिन्दी प्रचार का कार्य -- राष्ट्रभाषा पद पर हिन्दी की प्रतिष्ठा -- विभिन्न पत्र-पत्रिकाएं -- हिन्दीप्रेमी साहित्यकार । आधुनिक कालीन प्रमुख काव्य प्रवृत्तियां -- (क) छायावादपूर्व युग (ख) छायावाद युग (ग) छायावादोत्तर युग । आधुनिक खण्डकाव्य । निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय : (पृष्ठ ८१ से २१३ तक)

खण्डकाव्य परम्परा

आधुनिक काल से पूर्व की धारा -- आदिकाल की धारा -- सन्देश रासक -- बीसलदेव रासो -- जिनोदय सूरि विवाहलउ -- हरिश्चन्द्रपुराण -- पूर्व मध्यकाल की धारा -- जानकीमंगल -- वेलिकृष्ण रुक्मिणी री -- सुदामा-चरित -- पार्वतीमंगल -- चक्रव्यूह -- मधुमालत -- गोरा बादल की कथा -- मृगावती -- चित्रावली -- मधुमालती -- उत्तरमध्यकाल की धारा -- सुजान-चरित, उषाहरण, स्नेहलीला -- उषालीला, ध्रुवलीला -- हम्मीरहठ -- रुक्मिणी परिणय आदि -- निष्कर्ष ।

क

आधुनिक खण्डकाव्य -- प्रारंभिक अथवा छायावाद पूर्व खण्डकाव्य -- एकांतवासी योगी -- ऊजड़ ग्राम -- श्रांतपथिक -- हरिश्चन्द्र -- प्रेमपथिक (ब्रजभाषा -- रंग में भंग -- जयद्रथवध -- मौर्यविजय -- प्रेमपथिक (खड़ी बोली) -- द्रौपदी चीर-हरण -- मिलन, किसान, विकट-भट, महाराणा का महत्व -- अनाथ -- अभिमन्यु का आत्मबलिदान -- पथिक -- वीर हमीर । सामान्य विशेषताएं । निष्कर्ष ।

ख

छायावादी युग के खण्डकाव्य -- ग्रंथि -- कीचकवध -- पंचवटी -- आंसू -- अभिमन्युवध -- शक्ति -- वकसंहार, वनवैभव, सैरन्ध्री -- स्वप्न -- उद्धवशतक -- चित्तौड़ की चिता -- आत्मोत्सर्ग -- सुहाग -- सिद्धराज -- तुलसीदास

नहुष -- अभिमन्यु पराक्रम । सामान्य विशेषताएं तथा निष्कर्ष ।

ग

छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्य -- काबा और कर्बला -- कुरुक्षेत्र -- कारा -- नकुल, विषपान -- कौशल का काल -- अजित -- बरगद की बेटी -- लक्ष्मण-शक्ति -- कर्ण -- हिडिम्बा -- गोरा-वध -- अशोक -- रश्मिरथी -- रूपछाया -- चांदनी रात और अजगर -- युद्ध -- कैकेयी -- कामिनी -- शकुन्तला -- तप्तगृह -- सत्यपथ -- पांचाली -- प्रयाण -- सिंहद्वार -- विदुलोपाख्यान -- सती सावित्री -- तात्या टोपे -- गृहलक्ष्मी -- अनासक्ति -- चंदेरी का जौहर -- अग्निपथ -- दशानन -- वीरलाल पद्मधर -- कचदेवयानी -- अमृतपुत्र (प्रभु ईसा) -- अनुप्रिया -- दानवीर कर्ण -- प्रेम-विजय -- द्रौपदी -- भूमिजा -- प्रह्लाद -- रणचण्डी -- कोणार्क -- उर्वशी -- चित्रकूट -- गुरुदक्षिणा -- प्राणार्पण -- कौशिककथा -- संशय की एक रात -- स्वतंत्रता की बलिवेदी -- महारानी लक्ष्मीबाई -- रत्नावली -- कालकूट -- पाषाणी -- सौमित्र -- कुंवरी -- मुक्तियज्ञ -- आत्मजयी -- अजेय पौरुष -- चक्रव्यूह -- प्रतिपदा -- सुनन्दा -- रत्ना की बात -- द्रोण -- परीक्षित -- कुटिया का राजपुरुष -- अनारी-नर -- सुवर्णा -- प्रवीर -- शिवाजी -- उत्तरजय -- भस्मांकुर । सामान्य विशेषताएं -- आख्यानक कविताएं ।

चतुर्थ अध्याय : (पृष्ठ २९४ से ३३७ तक)

खण्डकाव्य : अंतरंग अवलोकन

कथावस्तु -- खण्डकाव्य में कथावस्तु की योजना -- प्रख्यात -- पौराणिक कथावस्तु -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावाद युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में ।

ऐतिहासिक कथावस्तु -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादी युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में -- काल्पनिक कथावस्तु -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादी युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में । निष्कर्ष ।
पात्र एवं चरित्र-चित्रण -- खण्डकाव्यों में उसका स्थान -- प्रख्यात पात्र -- काल्पनिक पात्र -- पौराणिक कथापात्र -- ऐतिहासिक कथापात्र एवं काल्पनिक कथापात्र । पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादी युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में । ऐतिहासिक पात्र -- ऐतिहासिक पात्र एवं चरित्र-चित्रण -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावाद युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में -- निष्कर्ष । काल्पनिक पात्र -- काल्पनिक पात्र एवं चरित्र-चित्रण -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादी युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में -- निष्कर्ष ।
प्रकृति चित्रण -- उद्देश्यचित्रण -- वातावरण चित्रण -- रस-संयोजन -- आधुनिक खण्डकाव्यों का अंतरंग-सौष्ठव ।

पंचम अध्याय : (पृष्ठ ३३४ से ३६६ तक)

आधुनिक खण्डकाव्य : बहिरंग-अवलोकन

खण्डकाव्य में बहिरंग पक्ष का स्थान -- भाषा -- ब्रजभाषा -- खड़ीबोली -- वर्णनशैली -- समास्यानशैली -- गीतिशैली -- मनोविश्लेषणात्मक शैली -- हास्य व्यंग्यात्मक शैली -- । अलंकार -- अर्थालंकार -- शब्दालंकार -- पाश्चात्य शैली के अलंकार मानवीकरण, विशेषण विपर्यय -- चित्रात्मकता

ऐतिहासिक कथावस्तु -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादी युग के खण्डकाव्यों में -- छायावदोत्तर युग के खण्डकाव्यों में -- काल्पनिक कथावस्तु -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादी युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में । निष्कर्ष ।
पात्र एवं चरित्र-चित्रण -- खण्डकाव्यों में उसका स्थान -- प्रत्यात पात्र -- काल्पनिक पात्र -- पौराणिक कथापात्र -- ऐतिहासिक कथापात्र एवं काल्पनिक कथापात्र । पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादी युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में । ऐतिहासिक पात्र -- ऐतिहासिक पात्र एवं चरित्र-चित्रण -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावाद युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में -- निष्कर्ष । काल्पनिक पात्र -- काल्पनिक पात्र एवं चरित्र-चित्रण -- छायावाद पूर्व युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादी युग के खण्डकाव्यों में -- छायावादोत्तर युग के खण्डकाव्यों में -- निष्कर्ष ।
प्रकृति चित्रण -- उद्देश्यचित्रण -- वातावरण चित्रण -- रस-संयोजन -- आधुनिक खण्डकाव्यों का अंतरंग-सौष्ठव ।

पंचम अध्याय : (पृष्ठ ३३४ से ३६६ तक)

आधुनिक खण्डकाव्य : बहिरंग-अवलोकन

खण्डकाव्य में बहिरंग पक्ष का स्थान -- भाषा -- ब्रजभाषा -- खड़ीबोली -- वर्णनशैली -- समास्यानशैली -- गीतिशैली -- मनोविश्लेषणात्मक शैली -- हास्य व्यंग्यात्मक शैली -- । अलंकार -- अर्थालंकार -- शब्दालंकार -- पाश्चात्य शैली के अलंकार मानवीकरण, विशेषण विपर्यय -- चित्रात्मकता

एवं कलाविधान -- छन्दविधान -- आधुनिक खण्डकाव्यों में प्रयुक्त विभिन्न छन्द -- शिल्प सम्बन्धी अन्य बातें -- मंगलाचरण -- सर्गविधान -- नामकरण। निष्कर्ष।

चतुर्थ अध्याय : (पृष्ठ ३६७ से ३८१ तक)

आधुनिक खण्डकाव्य परम्परा : वर्गीकरण

कालक्रमानुसार आधुनिक खण्डकाव्यों का वर्गीकरण -- आचार्यों एवं आलोचकों द्वारा खण्डकाव्य का वर्गीकरण -- वर्गीकरण के विभिन्न आधार -- विभिन्न तत्वों के आधार पर वर्गीकरण -- कथावस्तु -- प्रख्यात -- काल्पनिक-पौराणिक -- महाभारत के आख्यान एवं उपाख्यानों पर आधारित खण्डकाव्य -- रामायण कथा पर आधारित खण्डकाव्य -- भागवत् जैसे अन्य पुराणों पर आधारित खण्डकाव्य -- वर्णित कथा पर आधारित खण्डकाव्य -- मुस्लिम सांस्कृतिक पुराण पर आधारित खण्डकाव्य -- ऐतिहासिक -- भारत वर्ष के प्राचीन इतिहास पर आधारित खण्डकाव्य -- भारत वर्ष के आधुनिक इतिहास पर आधारित खण्डकाव्य -- काल्पनिक -- राष्ट्रीय तामूलक -- प्रेममूलक -- सामाजिक -- विचारात्मक -- हास्यात्मक। घटनाप्रधान -- चरित्रविश्लेषण-प्रधान -- भाव प्रधान -- प्रतीकात्मक -- हास्यव्यंग्य प्रधान। रस के आधार पर -- एकरसात्मक -- बहुरसात्मक -- शृंगार रस प्रधान -- संयोग शृंगार रस प्रधान -- विप्रलंभ शृंगार प्रधान -- वीर रस प्रधान -- करुणरस प्रधान -- हास्यरस प्रधान। सर्गविधान के आधार पर -- सर्गबद्ध -- सर्गमुक्त -- सर्गमुक्त किन्तु वर्णन गीत से युक्त -- सर्गबद्ध एवं वर्णनसंकेत युक्त। छन्दविधान के आधार पर -- एकछन्दात्मक -- बहुछन्दात्मक -- मुक्तछन्दात्मक। भाषा के अनुसार -- ब्रजभाषा -- खड़ी बोली। वर्णन शैली के आधार पर -- वर्णनात्मक अथवा समाख्यानशैली -- नाटकीयशैली -- प्रगीतशैली -- मनोविश्लेषणात्मक शैली -- निष्कर्ष।

सप्तम अध्याय : (पृष्ठ ३८२ से ३९४ तक)

निष्कर्ष

विभिन्न काव्यरूपों के बीच खण्डकाव्य का स्थान -- खण्डकाव्य के लक्षण -- परिभाषा -- खण्डकाव्य उदय एवं उत्कर्ष -- खण्डकाव्यों का सुवर्णकाल -- खण्डकाव्य क्षेत्र में क्रांति -- खण्डकाव्यों का भावसौष्ठव -- कलासौष्ठव -- वर्गीकरण -- युगसन्देश -- भविष्य ।

परिशिष्ट : (पृष्ठ ३९५ से ४१५ तक)

विविध उद्धरण तथा पुस्तकाय

सन्दर्भ ग्रंथ-सूची